₹	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>म</u>
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।	
IĘ	ग्रन्थ अमर सार	ඇ 건
सतनाम	(भाखल दरिया साहेब)	सतनाम
	साखी - १	
सतनाम	सतगुरु चरण सुधा सम, विमल मुक्ति का मूल।	सतनाम
H	पद पंकज लोचत हिये, अजर अनूपम फूल।।	큪
l	चौपाई	
सतनाम	अजर नाम सतपुरुष अनूपा। दया सिन्धु सुखा अविगति रूपा।१।	सतनाम
ᆌ		
_	अमृत सागर सुखा की खानी। रूप राशि किमि कहौं बखानी।३।	
सतनाम	नारद शारद और महेषु। चतुरानंद सब कहेउ संदेसू।४।	सतनाम
	ि जारमारा में भारत वर्ष सा वामा जार जनमें मुन्त में वामा प्राप्त	
l ≖	किहि किह थाके ज्ञान गुरु ज्ञाता। जोग समाधि अकथ किह बाता।६।	
सतनाम	को किह सके जगत को मूला। अवनी पताल गगन धन फूला।७।	सतनाम
	जाके रूप जगत मिन बरई। को किव कहे कथा अनुसरई।८।	
E	कृपा कीन्ह मोहिं दीन दयाला। देखोव सम्पूरण उदित काला। ६।	सतन
सतनाम	साखी – २	114
	देखेवो सम्पूरन प्रेम गीत, पुरुष पुरान अमान।	
सतनाम	लीला अजर अनूप है, को किर सकै बखान।। चौपाई	सतनाम
HH HH	वापाइ  मैं तुम दास दरशन हिये राखा। सींचत जल हरिहर द्रुम साखा।१०।	큠
	दर्शन देखि कमल वृगसाना। यह निर्गुण गुन रहित अमाना। १९।	
सतनाम	शिशि शारद को पूरण काला। वृगसित कुमुदिनी भई निहाला। १२।	सतनाम
E	सो रूप हृदय नयन सम मोरा। थिकत भै जिमि चन्द चकोरा।१३।	크
_	ऐन दीपक मानो मिन बरि जाई। जरत ओरात ना फेरि बुताई। १४।	لد
सतनाम	अगम लीला कछु कहि नहिं जाई। कहत संकोचत मन पछताई।१५।	सतनाम
	ज्यों फिण मिण जिमि धरत उतारी। चरत चरा दीवि दृष्टि पसारी।१६।	
E	फेरि नहिं तनिक राखहिं विश्वासा। लीन्ह उठाय अर्ध मुख ग्रासा।१७।	
सतनाम	  सो मनि हृदय सुनहु जनि जाता। ज्यों धन कृपणी रहत मन राता।९८।	सतनाम
ľ		] '
4	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

₹	तनाम	सर	ानाम	सत	नाम	सतना	म	सतना	F	सतनाम	Ŧ	सतन	 ∏म
	गुंगा	ज्ञान	जो ं	अमृत	चाखो	। एहि	मगु	पगु	कवन	फेरि	राखो	195	ı
E	किछु	किछु	कह्यो	सुधा	सम	। ए।ह बानी। विमल	मुक्ति	मूल	प्रे म	पंथ र	बखानी	१२०	    취
सतनाम	प्रे म	मूल	परमा	रश ग	गर्इ ।	विमल	विमत	न जर	प्त व	रणि	सुनाई	129	[ ]
						साखी							
IE			ज्ञा	ानी अन	न्त लो	चन सम	, सम	दृष्टि र	ाम भा	व।			섥
सतनाम			ত	ारत प्रेम	हिया	दिया, वि	वेमल स	दा सत्त	न भाव	11			सतनाम
						चौप	ाई						
IE	जिन्दा	रूप	मोहिं	दरशन	दीन्ह	ा। अग ती। बर्ा	म लील	ना गरि	ते केह	हु केहु	चीन्हा	१२२	   섥
सतनाम	मोहिं	पे कृ	पा र्क	ोन्ह ब	हु भां	ती। र्बा	रेसु सु	ुजल ः	जल न	साली ं	सुखाती	१२३	ᅵᆿ
	ज्यों	कमल	दल	जल र	तो री	ती। अ	ति पं	कज	मानो	प्रे म	प्रतीती	१२४	ı
E	चरण	कमत	न दल	न मैं	अनुर	ती। अ ागी। ग । जीव	पदा र	रहों	पद '	पं कज	लागी	१२५	सतनाम
Ҹ	भृंगा	भाव	प्रे म	रस	माता	। जीव	ब्र ह्य	बिच	प्रे म	सो	ज्ञाता	।२६	니큐
	1	•				हारा ।							- 1
IĘ	बाहर					ो। उल							1711
सतनाम			•			रा। ज		- ,					
	1					ता। च					पुनीता		
ĬĘ	या त	न मन	न जीव	व देउ	सब	वारी। ई। च	ले हु	कृपा	करि	हाध	पसारी	139	<sup> </sup> 설
4	तुमते	औ र -	दू ज	ा नहि	ं को	ई। च	रण स	ादा ि	चत	रहों ं	समोई	।३२	니큄
	प्रगट	प्रे म	गुण	गहिर	गंभीर	। सीं		नुधा ।	सम र	सकल	शरीरा	133	1
計				_		साखी		_					섬기
सतनाम				$\circ$		शरीर में,	•						सतनाम
			में	तुम द	ास दर्श	न गति,	•	गय यम	न त्रास	П			
सतनाम		0.0	3.0			चौप	•						सतनाम
묇				•		रीरा।							
ı	1					ती। र							
सतनाम	सुमिति	न करे	्सुख	सदा	शरी	रा। कु गा। ज्य	मित	बिहाय	Д` <del>Г</del>	रस	धीरा	।३६	   삼기
HH HH													
	_	_		•		गाई। उ			_				
크	वारि	य वा	र बर	ाबार	तरना	। जल गा। तव	का प्र	गात	जात	नाह	बरनी	₹	   석기
E	आपुा	ह सि	।च स	ाखा प्र	ातपाल	गा। तट ——	ाप प्र	ात ः	नल व	भाष्ट	तराला	180	ᅵᆿ
=	 ातनाम		नाम	सत	नाम	सतना	2 H	सतना	<b>T</b>	सतनाम		सतन	
	INT III I	<u> </u>	11111	VIVI	11.1	XIXI'II	- 1	7171,111,	1	7171.114	1	ZIZI.	/111

स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	हृदये	कमल कली	प्रीति समा	ना। छुटेवो	तबहिं तन	त्यागेवो प्रा	णा १४१ ।
ĮĘ	ब्र ह्म	ज्ञान और	प्रीति समेत	ा। फिरि वि	मेलिहें तुम	त्यागेवो प्रा चरण पुनी इं भौ अनुरा	ता ।४२ । 🛓
सतनाम	चरण	में चित्त व	ग्रेतिन होय	लागा। छुटे	कबहीं नहि	इं भौ अनुरा	गा ।४३ । ᡜ
						कमल दल दे	
  王	ज्ञान	विवेक बि	चारहिं ज्ञा	ता। नाम	प्रतीति प्रे	म रस मार	सा । ४४। स
सतनाम	प्रबल	माया है	मोह विक	ारा। ज्यौं	तप्त पर	पावक जा	ता ।४५। <mark>स</mark> रा ।४६। <mark>स</mark>
	नाम	सुधा तुम	अमृत बा	ानी। पावव	<b>ह</b> जरत बु	तावहिं पान जिकरिजो	नी ।४७ ।
<u> </u>	दुःखा-	-सुख सम्पत्ति	ा विपत्ति वि	योगा। विर	ह विषाद ते	जि करि जो	गा।४८। 🔏
सत•				साखी - ५	(		गा ।४८। <b>स्वतन्त्र</b>
		•	भौ गुण ज्ञान	प्रेम गति, तर	.नि शील सन्त	ोष ।	
<u>테</u>		7	बढ़ेवो तेज ताग	नस कली, मो	ह घटा का रो	षि।।	섥
सतनाम				चौपाई			सतनाम
	धन्य	भाग्य जो	तुम कहं ल	नागा। मातु-	-पिता सुखा-	-सम्पत्ति त्या दि सब जा <sup>ः</sup> य फेरि कह	गा ।४६ ।
ᆵ	राज-	काज सुखा	सम्पत्ति ना	ना। बिना	भाकित बा	दि सब जाः	ना ।५०। <b>स्तानम</b> इइ ।५१। <b>स</b>
सत							
						पु मन मार	
तनाम	ऊं च	नीच महि	मंडल राज	ना। राव	रंक सुखा	संकल समार विपत्ति वियो	मा । ५३। वि
सत	मरण	जीवन फीरे	जन्म संयो	गा। दुख-सु	ुख सम्पत्ति	विपत्ति वियो	भा ।५४। 🛱
			, ,	छन्द – १	_	<b>~</b>	
सतनाम			। सो भाग सो		•		सतनाम
सत			ग कमल दल		- (		쿸
		•	पुलिक तन इ	•			
सतनाम		श्रवण	समीप सूचित	_	जिहु सन्त गुण जिहु	। ज्ञानहीं।।	सतनाम
- - - -		2 2	, ,	सोरठा	· · ·	\	🛱
			के जस मिलु				
सतनाम		चरण	ा कमल को ध	3 6	सकउ सम्भार	र यह।।	सतनाम
 재대		<i>cy</i> ·		चौपाई			
		•			•	त ज्ञान प्रभा	
सतनाम				•		ला जन जा <sup>र</sup>	الدا
ͳ	(	पन्थ सर्ब	सन्त सवी		ननक मु।न <b>=</b>	कथा बिचा	रा ।४७ । 🖪
 स	 तनाम	सतनाम	सतनाम	3 सतनाम	सतनाम	सतनाम	 सतनाम
	·· · · · ·	VI VI II I	3131 11 1	*151 11 1	*1 *1 11 1	***************************************	7171 11 1

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम
	डंड कवंडल कहा बखाानी। जोगिन्ह कहा आपु मत जानी।५०	
巨	मेरू दंड आसन कहं साधी। द्वादश पवन रहे तन राधी।५६ होखो ज्ञान न आवे जोगा। तन भौ छिन्न व्यापेक रोगा६०	; । ধু
सतनाम	हों छो ज्ञान न आवे जोगा। तन भौ छिन्न व्यापेक रोगा६०	, 기력
	डंडिन्हि जप तप कीन्ह विधाना। जपे गायत्री सांझ बिहाना।६९	
ᄩ	छव दरशन भोष वैरागी। सुमिरहिं सभो मुक्ति फल लागी।६२	1
सतनाम	छव दरशन भोष वैरागी। सुमिरहिं सभो मुक्ति फल लागी।६२ सेवड़ा और सब जंगम जोगी। आपु आपु मत रहे बियोगी६३	<u> </u>
	पंडित समुरिहं वेद पुराना। करम कांडी सभा करे बखााना।६४	
ᆈ	साखी - ६	
सतनाम	जोग मत है मुनि मत, सन्त मत ब्रह्म विवेखी।	सतनाम
B	कहे मुनि अनेक मत, एक-एक गति देखी।।	"
	निर्गुण सगुण विवेक करि, खोजु मुक्ति का पंथ।	4
सतनाम	उलटा पलटा जोति के, सब चाहे चलावन रंथ।।	सतनाम
B	चौपाई	"
┩	जैसे द्रुम लता लपटाना। विविध पंथ भोष अरूझाना।६५	,   목
सतनाम	खारी खांड एक मोल आना। केशरि कुसुम एक सम जाना६६	1711
B	रूपा रांगा निरिंखा बिन आवै। समुझि ज्ञान पद पंकज पावै।६७	
ᆈ		
निना	कनक पीतर के एक शरीरा। पारस करे सो ज्ञान गंभीरा।६ ट पतिवरता और बहुत भतारी। सानहिं सभे एक व्यभिचारी।६ ६	
P	सतगुरु शब्द विवेक विचारी। विवरण करो ज्ञान निरुआरी।७०	
┩	जाते होय मुक्ति फल काजू। बैठि अमर पुर अटल राजू।७९	
सतनाम	जरा मरण नहिं जन्म संयोगा। प्रेम प्रीति हौ विमल विरोगा।७२	1711
P	खोजहु सतगुरु सो पन्थ लागा। पीयहु सुधा सम प्रेम सुभागा।७३	
ᆈ	साखी - ८	
सतनाम	पीयहु सुधा सम ज्ञान रस, सुन्दर सुभग शरीर।	सतनाम
	भजिस काहे नहिं प्रेम पंथ, दया सिन्धु के तीर।।	7
<sub>H</sub>	चौपाई	4
सतनाम	पुरुष पुरान अछै सम तूला। छोड़ी अनंत एक गहु मूला।७४	सतनाम
	कमल सुमंडित परसु सुभागा। मूल शब्द प्रेम अनुरागा।७५	
<sub>H</sub>	सतगुरु चरण रहो लवलीना। विध्नि अनेक पाप होय छीना।७६	
सतनाम	अघ पातक सब जात ओराई। परसहु प्रेम प्रीति लव लाई।७७	121
	4	
स		नाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम
	भर्भ विरोध तेजहु जग माहीं। वाद विवाद काम कछु नाहीं।७ व	;
上	शीतल अमी सदा सुख माहीं। बोलिहं विमल रस बैन सोहाहीं।७६	;। র
सतनाम	सन्त सनेह निजु समय संयोगा। मिलहिं विहंसि हंसि प्राण वियोगा।८०	सतनाम
	कुमित काल सभा जाय बिगोई। पद पंकज गित हृदय समोई।८९	)
上	कुमित काल सभा जाय बिगोई। पद पंकज गित हृदय समोई।८९ तेजि चतुरपन प्रीति लगाई। मानो सुधा समेत सोहाई।८२ छन्द - २	ু   ব্লু
सतन	छन्द – २	सतनाम -
ľ	ज्यौं मराल विवरण गती, नीर क्षीर बिलगावहीं।	
E	पाय विमल पद ज्ञान सुधा सम, प्राण प्रेम रस चाखहीं।।	섥
सतनाम	देखि देखि सभ अगम निगम गति, सो सुख पंथ सोहावहीं।	सतनाम
	प्राणपति प्रिय ज्ञान रतन गति, गगन मगन झरि आवहीं।।	
E	सोरठा - २	섥
सतनाम	कहे दरिया करु प्रीति, सत्तनाम निश्चय गहो।	सतनाम
ľ	चले सो भौजल जीति, पद पंकज लोचत रहो।।	
E	चौपाई	섥
सतनाम	येहि बीसु पन्थ अहे बहुतेरा। सुमिझ ज्ञान निजु करो निमेरा। ८३	सतनाम
	हो खो सन्त विवेकी ज्ञानी। मुक्ति पन्थ लेत पहचानी। ८४	}
नाम	माटी मन्दिर कनक मढ़ि घेरा। खोदत निकले खाक के ढेरा।८५	
सत	अकरम करम काम अरूझाना। कलई के काम अन्त बिलगाना। ८६	
Ш	कनक दिवाल मिंह मिट्टी लेवारा। तामे निकले कनक सुधारा। ८५	)
E	जो जन चाहे मुक्ति विलासा। तौलि ज्ञान निजु करे निवासा। ८०	; 니約
सतनाम	तूनी रंग कपड़ा बोरी डारा। केशरी पटतर देहिं गवारा। ८६	सतनाम
Ш	सो केशरी सब जग निहं देखा। अवर फूल सब विविधि विसेखा।६०	)
E	कीन्हों पन्थ विविधि प्रकासा। मुक्ति पन्थ सतगुरु के पासा।६९	)   설
सतनाम	सो सतगुरु सत पन्थ निनारा। और ज्ञान गमि जगत् पसारा।६२	सतनाम
Ш	साखी - ६	
則	प्रेम ज्ञान जब उपजे, चले जगत् कह झारी।	섥
सतनाम	कहे दरिया सतगुरु मिले, पारख करे सुधारी।।	सतनाम
Ш	चौपाई	
सतनाम	ज्ञान गमी जेहि होय शरीरा। पारखा करे सो ज्ञान गंभीरा।६३	1211
組	ज्यों नग लाल चीन्हे चित लाई। महंगे मोल मिन मानिक पाई। ६१	; 니큄
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम
	सो हीरा सभा जग निहं खानी। यह पारख बुझे कोई ज्ञानी। ६५	
팉	देखात छोट सुबुक जो जानी। अति अतीत गुण करो बखानी।६६ और फिटिक बहुते जग माहीं। तेहि पटतर कोई तूलत नाहीं।६७	세
뒢	और फिटिक बहुते जग माहीं। तेहि पटतर कोई तूलत नाहीं।६७	'   1
	जब लिंग ज्ञान गमी निहं होई। तब लिंग पारख करे ना कोई।६०	; [
lĘ	मणि माणिक मति अन्ध न देखा। कोटि ज्ञान किह शब्द विवेखा। ६६	्र।
सतनाम	ज्यों मानिक महि भरि गौ छारा। लीन्ह हाथ फेरि डारु गंवारा।१००	
	सुनत ज्ञान निकट चिल आवै। लहवट ज्ञान जल जाय बुतावै।१०९	
匡	हृदय कठोर पत्थल का रेखा। बरिसु सुजल घर बहुत सुलेखा।१०२	ᆀ
सतनाम	साखी - १०	. ' सतनाम
"	तनिक प्रेम नहिं भींजहि, जड़ हित भिक्त बेकार।	
l ∃	सो खग कारण कवन है, जो बोतल सगुन विचार।।	섥
सतनाम	चौपाई	सतनाम
"	लघु पतन का बोलिहं बानी। सगुन विवेक विचारिहं ज्ञानी।१०३	
囯	सो कवि कहेवो वचन अति नीका। बिना विवेक भेष सब फीका।१०४	( ) 기설
सतनाम	हिम संग जो बहे अनीला। द्रुम छोड़ी का मारहिं शीला।१०५	
"	जो नर बिषौ कुमित रस घेरे। ता सिर कर्म काल निति हेरे।१०६	.
l ∃	कर गिह व्याधे चाँप सर जोरा। सनमुख सावज कौन निहोरा।१०७	'
सतनाम	जाकी बुद्धि भ्रम होय जाई। सो न ज्ञान गति काहु लखाई।१००	1-4
	जनु दह कमल फूला है केता। तेहि महं उगेव भान एक सेता।१०६ अलि पंकज से परा भुलाई। विधि माला महं पैठा जाई।११०	
l ∃	पैठत प्राण विकल होय जाई। भली बुद्धि पै काह भुलाई।१९९	
सतनाम	कमल छोड़ि विषि परसे कोई। अमी पदारथ पदहिं विगोई। ११२	1—4
"	ज्यों दीपक रोशन कर दीन्हा। बहे समीर खांडित करि लीन्हा। १९३	` '
厓	जबहिं पवन जो बहे सुधारा। दीपक छीन भया अधियारा।११४	
सतनाम	रहा दीपक सो गया बुझाई। अन्ध धुन्ध कछु नजिर न आई। १९५	41
"	काम लहिर जाके तन आवे। ज्ञान दीपक कहं जाय बुझावे। ११६	
旦	अन्ध धुन्ध होय सकल शरीरा। उड़ि पतंग दीपक के तीरा।११७	
सतनाम	जीव ब्रह्म माया बिच साना। ज्यों द्रुम करि लता लपटाना। ११ ट	1 4
	साखी – 99	
且	योगी या तन किस के, रहे जक्त कहं त्यागि।	섳
सतनाम	बिरला बांचे लपट से, रगरि काठि की आगि।।	सतनाम
	6	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>—</u> [म
	चौपाई	
巨	जापर कृपा कीन्ह कृपाला। सो जन बांचिहं जाल जंजाला। ११६। सामर्थ्य जेहि चितविहं चितलाई। सो जन कर्म काल निहं खाई। १२०।	섥
H 대 마	सामर्थ्य जेहि चितवहिं चितलाई। सो जन कर्म काल नहिं खाई।१२०।	111
	जाके सतगुरु दीन दयाला। मेटहिं कष्ट दुःखा यमजाला। १२१।	
巨	ताकर विघ्न होय सभा हानी। पावे प्रेम सुधा रस बानी।१२२।	섥
H 대 마	ताकर विघ्न होय सभा हानी। पावे प्रेम सुधा रस बानी।१२२। अभी प्रेम रस चाखो सोई। चरन कमल दल रहे समोई।१२३।	111
	सत्तानाम के लेई उसासा। पुलिकत प्रेम नाम प्रकाशा। १२४।	
E	सुधा समेत विमल रसव बानी। प्रेम प्रीति निजु विहित बखानी। १२५। साखी - १२	섥
M	साखी - १२	111
	सत्तनाम निजु प्रेम रस, सतगुरु प्रेम प्रतीत।	
巨	कहे दरिया जन निजपुर, जाय सो भवजल जीत।।	섥
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	जग की प्रीति चित्र का रेखा। मोहनी प्रीति जक्त सभ देखा। १२६।	
팉	ब्रह्मादिक सनकादिक आदी। सत्ता बात कहे सो वादी।१२७।	섥
सतनाम	इन्द्र समान को किहये वीरा। गौतम घरणी ते रस क्रीडा। १२८।	सतनाम
	अहे अहिल्या सुन्दर नारी। कप्ट चन्द्रमा बात बिगारी।१२६।	
틸	पतिवरता पतिव्रत जो करई। इन्द्र जाय बरत जो टरई। १३०। गौतम ताके दीन्हों श्रापा। सो जाने नर ऐसन पापा। १३१।	섥
सत	गौतम ताके दीन्हों श्रापा। सो जाने नर ऐसन पापा। १३१।	크
	लागेवो प्रीति जो त्यागेवो जोगा। किह न जात मनसा मन भोगा १३२।	
目	छन्द – ३	섥
सतनाम	ज्यों कमल भंवर बिसारि के, चित्त चरण प्रीति न लावहीं।	सतनाम
	माया प्रबल कर्म कली है, नाम मनी विसरावहीं।।	
E	भव भर्मि, भटके अटिक लटके, शीश धुनि पछतावहीं।	섥
सतनाम	कइ कल्प कलपे अल्प जीवन, चरख चढ़ि फल पावहीं।।	सतनाम
	सोरठा - ३	
E	जीव ब्रह्म कहं देख, बीचे माया मद सनी।	섥
सतनाम	यह वह एकै लेख, कनक बीच ज्यों है कनी।।	सतनाम
	चौपाई	
틸	महादेव संग अहे भवानी। मृग नयनी और कोकिल बानी। १३३।	섥
सतनाम	नखा सिखा सुन्दरि चित्र उरेहा। अहे पद्मिनी सुन्दर देहा।१३४।	सतनाम
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	म

	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	
	भस्मापुर के बर जो दीन्हा। महादेव कह जारन लीन्हा।१३५। दीन्हों वर जो प्रीति हित जानी। सुन्दरी संग जो देखि भवानी।१३६। देखात पाप ताहि उर जागा। काल मती वश भयो अभागा१३७।	
巨	दीन्हों वर जो प्रीति हित जानी। सुन्दरी संग जो देखि भवानी।१३६।	섥
सतनाम	देखात पाप ताहि उर जागा। काल मती वश भायो अभागा१३७।	111
ľ	बिकल भाई शंकर संग नारी। कठिन कल्पना कंद्रप भारी।१३८।	
E	खोदे फिरे नहिं लेहि उसासा। निरंजन कला कीन्हा प्रगासा।१३६।	섥
<u>सति</u>	खोदे फिरे निहं लेहि उसासा। निरंजन कला कीन्हा प्रगासा।१३६। मोहिनी रूप सुन्दर जो कीन्हा। भस्मासुर जो भये अधीना।१४०।	निम
	यह वह एकै रूप बनाया। जगदम्बहीं निकट जनु पाया।१४१। उलटि हाथ माथ दे जारा। भौ भस्म नखा सिखा संहारा।१४२। छोड़ि रूप दुसर धरि गयऊ। महादेव तब पूछत भयऊ।१४३।	
E	उलटि हाथ माथ दे जारा। भौ भस्म नखा सिखा संहारा।१४२।	섥
सतनाम	छोड़ि रूप दुसर धरि गयऊ। महादेव तब पूछत भायऊ। १४३।	निम
	कवन रूप से वोहि बसि कीन्हा। महादेव अस पूछन लीन्हा।१४४।	
E	कवन रूप से वोहि बसि कीन्हा। महादेव अस पूछन लीन्हा।१४४। तबे निरंजन बोले विचारी। काह खोज तुम परे हमारी।१४५। महादेव तब विनती कीन्हा। मोहिनी रूप धरिके छवि लीन्हा।१४६।	섥
सतनाम	महादेव तब विनती कीन्हा। मोहिनी रूप धरिके छवि लीन्हा। १४६।	1
	भौ डगमग तब ज्ञान भुलाना। देखात रूप छुटा जो ध्याना।१४७।	
l ≣	भागि चले तब भौ अधीना।। तन से काम भया तब छीना।१४८। सो दसा कछु कहि नहिं जाई। महादेव कर जोग बड़ाई।१४६।	ඇ 건
뒢	सो दसा कछु कहि नहिं जाई। महादेव कर जोग बड़ाई। १४६।	크
	साखी – १३	
तनाम	काम कला जग प्रबल है, कवन सके तेहि जीति।	सतन
ᅰ	जंगम योगी सेबड़ा, काहि न लागी प्रीति।।	큪
	चौपाई	
सतनाम	विश्वामित्र तपस्या कीन्हा। कर्मकाण्डि पूजा लव लीन्हा।१५०।	सतनाम
ᅰ	अहे सरोवर एक सुन्दर तहवां। पत्र कुटी बैठे रहे जहंवा।१५१।	
	योग कर्म विधि वेदी बांधे। बैठे तहां योग तत्व राधे।१५२।	
सतनाम	प्रातः उठी करिहं स्नाना। बाहर जाय बैठिहं मैदाना।१५३। वृक्ष एक तहँ सुन्दर छाया। चौका चन्दन तहाँ बनाया।१५४।	सत्
ᅰ		
	माथे तिलक काँध जनेऊ। पूजा करिहं इष्ट कर सेऊ।१५५।	
सतनाम	फूल कारन कानन जब गयऊ। पुष्प इष्ट तहँवा ले अयऊ। १५६। फूल के लेइ पूजिहं बहु भाँती। मनसा लीन रहे दिन राती। १५७।	सतन
	मोहनी एक जो सुन्दर शरीरा। फूल के गेडुआ खेले तेहि तीरा।१५८। मृग नयनी औ कोकिल बैनी। कटि केहरी औ चाल सलोनी।१५६। लोल कपोल दशन अति नीका। मोती चीखुर बिन्दु का टीका।१६०।	
सतनाम	मृग नयनी औं कांकिल बेनी। कटि कहरी औं चाल सलानी।१५६।	सतन
F		<b>표</b>
	8	1

स	तनाम		तनाम	सतना		गम	सतनाम			सतन	
	नखा '	सिख	ले स	सि भेंदा	ा बनाई।	बसन	झला इ	पलि पेन्हे	आई	195,9	
匡	ऋषि	तब	ध्यान	छोड़ि	ा बनाई। के ताका। बोलाई।	नै नन्हि	इ तीक्ष्ण	ा भौंहें	बाँका	११६२	1 4
सतनाम	भुजा	उठा	य जो	लीन्ह	बोलाई।	काम ब	बाण ल	ागा तन	आई	19६३	
	आवत				निहारा।						
ᄩ					साखी	- 98					4
सतनाम			बहु	त प्रीति क	रि बोलेवो,	निकट ज	नो लीन्हा	बोलाय।			सतनाम
			पट डा	ारि बैठे के	दीन्हों, र्खा	चे रूचि	१६७वच	न सोहाय।	1		
릙					चौ	पाई					4
सतनाम	ता सँ	ग प्री	ति की	न्ह लव	लीन्हा। बि	सरि ग	या जनु	योग न	कीन्हा	११६५	
	सात	मास	रहु	ताके सं	चौ लीन्हा। बि गा। नित	नित	प्रीति	करिहं प्र	। संगा	19६६	ı
सतनाम	एक रि	देन	खटपट	बोली	बानी। ऋ	षे तब	प्रीति	थोर कै	जानी	११६७	1 4
組	तु रत	जाय	। की-	हों स्ना	बानी। ऋर्षि ना। जहाँ	र पुष्प	तहँ	कीन्ह प	याना	११६८	ᅵᆿ
	1				आई। अ						- 1
सतनाम	तुरंत	गये	मोहर्न	ी रहु उ	नहवाँ। बो नाना। पष	ले विव	कल वच	प्रन यह	तहवाँ	1900	1 4
ᅰ	नेम व	करहिं	हम	नित स्	नाना। पुष	प लेई	हम व	करहिं दि	यधाना	1999	ı  ≢
		गनन	हम	फूल के	गयऊ। ड	ार नज	ादीक भे	ोट नहिं	जानी	1907	ı
1	तब म	नो हिन	नी अर	प्त बोली	बानी।	प्तात म	ास पूज	ना नहिं	जानी	११७३	삼     삼   1
ෂ	आजु	कवन	न व्रत	तुम ठ	ानी। बोवि	ते वचन	न अस	कहेउ ग्	<u>र</u> ुमानी	११७४	
L	मन प्र	पंच	ऋषि	क्रोध नय	न महँ त	ाका। दे	खात गभ	र्नपात भौ	वाका	1904	
सतनाम	मोहिर्न	ो चि	ते आई	ई आपु र्ा	ठेकाना। ब	ाहुरि ये	ोग फिरि	र कीन्ह	विधाना	११७६	<u> </u>
판					साखी	- १५					<b>王</b>
  ⊾			<u>c</u>	फ़हे दरिया	जग जाने,	सो ऋषि	भ काम अ	मधीन ।			
सतनाम				बिरला बां	चे मोह वश	, रहे न	ाम लवर्ल	ोन ।।			सतनाम
₩					चौ	पाई					1
│ □	जोर	जोरा	फा प्री	ोति जो	लागा। र	ज विन्	द अंडु	न फिरि	जागा	1900	1
सतनाम	वोहि	में र	नयन ं	पंखा भौ	झारी। प	केरि च	ला वह	प्रीति र्	<u>नु</u> धारी	1995	सतनाम
ľ	ऐसी	प्रीति	जगत	महँ की	न्हा। तनि	क बिल	गि फेरि	होहिं	अधीना	1905	٦
E	जीव	जन्तु	जहाँ	लगि ड	गोला। सब	वकी प्र	ोति का	म संग	डोला	1950	1
सतनाम	जो ब	गां चे	सो द	ब्रह्म स्वर	न्पा। पाप	पुण्य	नहिं	अविगति	रूपा	1959	<b>삼</b> (1 1 4 1 1 1 1
						9					
स	तनाम	स	तनाम	सतना	न सतन	गम	सतनाम	सतन	ाम	सतन	ाम

स	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	 म
	चौरासी कबहीं निहं जाई। गर्भ वास नहीं जाय नसाई।१८२।	
सतनाम	जो बांचे सो होय ब्रह्म ज्ञानी। ब्रह्म ज्ञान दृढ़ कहों बखानी।१८३। साखी - १६	सतनाम
	दर्पण दाग न लगाई, नयन रहे भरिपूर।	
सतनाम	ऐन ऐना में दीसे, कहे दिरया सोई सूर।। छन्द – ४	सतनाम
	सभ तेजि राज समाज जग को, भक्ति दृढ़ता लावहीं।	
틸		섥
सतनाम	मूल महिमा गगन झरि तहाँ, फूल परिमल आवहीं।	सतनाम
	तहां उदित ब्रह्म पुनीत जगमग, प्रेम मंगल गावहीं।।	
<u>∃</u>		섞
सतनाम	सतगुरु चरण सनेह, करो भिक्त दया धरो।	सतनाम
	प्रेम प्रीति निजु नेह, भव सागर तरि जाइहौ।।	
ᆲ	l •	섥
सतनाम	।  अमर कोस के दोष न लागा। मृगा माति आपु तन त्यागा।१८४।	सतनाम
	माया दोष देइ जिन कोई। जानि बूझि के बाउर होई।१८५।	
तनाम	विष अमृत रहे एक पासा। बिलगि गुन होय करे निवासा।१८६।	सत्न
뒢		큄
	सो परिमल तन मानुष लावै। शीतल अंग बहुत सुख पावै।१८८।	
सतनाम	तिन के तप्त दूरि सभ जाई। गन्ध सुगन्ध डाक सभ धाई।१८६।	सतनाम
	सो भुअंग जब डसेवो शरीरा। प्राण विकल तनिको नहिं थीरा।१६०।	큠
	रहे समीप भोद नहिं पावै। त्यों नर निकट नाम बिसरावै।१६१।	
सतनाम	गुण ऐगुण सकल घट बासी। सतगुरु से तब ऐगुण नासी।१६२।	सतनाम
ᄤ	अनल उसृष्टि घोरे जब आई। अंचल दे मुखा नयन बचाई।१६३।	<b>코</b>
	। ਬਾਸ਼ਾ ਰਿਕੜ ਕਾਮੇ ਤਰ ਰੀਤਾ। ਰਿਕਸ਼ਿ ਐ ਸਤ ਐ ਸੀ ਰੀਤਾ। ੧੬੫।	
सतनाम	ऐगुन त्यागि भया पुनि मीठा। देखि देखि तापे नयन भरि दीठा।१६५।	सतनाम
<b>₩</b>	साखी – १७	<b>코</b>
_	विष आपन वित्रमा हमें है मन महन्त्र सामित्र	
सतनाम	सो बुझे जेहि ज्ञान होय, उपजे प्रेम शरीर।।	सतनाम
ĬĮ Ž		표
<b> </b> स		∫ म

स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	— ₹
				चौपाई				
且	ज्यों	वारिधि जल	गहिर गंभीर	र गंभीरा।	तामे लाल	अनेकिन्ह हीर	त ।१६६ । ॑	섥
सतनाम	बड़ा	सोई जेहि	बड़ी बड़ाई	ि। सकल	सृष्टि जल	अनेकिन्ह हीर ताहि समाइ	[ 19 <del>E</del> 01	1
	सो	जल घटे ब	बढ़े नहिं ६	भाई। ऐस	ो सन्त स	ादा सुखादाई	19551	
픸	मरिज	ीवा जब त	न कहँ त्या	गा। पैठि	पताल ला	ल कहँ लाग फिरि अयउ	T 1955	섥
सतनाम	भा	अन्देशा जल	महँ गयऊ	। नग ले	हाथ बाहर	फेरि अयउ	ज्ञा२००। <mark>:</mark>	크
				साखी - १	ζ			
뒠		मा	रेवा गोता गम्भी	भीर जल, ले	निकला फेरि	लाल ।		섥
सतनाम		ā	रेखत जगत न	यन भरि, है	लाखों की म	ाल ।।	:	सतनाम
				चौपाई				
ᆒ	ऐसी	भिक्ति है प	पन्थ निनारा	। या तन	त्यागि जो	पन्थ सुधार	T 12091	섥
सतनाम						ँ ऍ सुखा त्यागे	। १०२ ।	सतनाम
			•			थ पगु ढारे		
सतनाम						न नहिं हेर दे मख बैन		석기
裾	  अमृत	। प्रेम देखो	नहिं नैना	। तब लि	् ग काह क	हे मुखा बैन <sup>.</sup>	[  २०५	쿸
				साखी - १		V		
सतनाम		<b>ज</b>	ब लगि प्रेम न	पाइया, तब	लगि पिया न	नह।		섬기
Ή			प्रेम सुरति सार्च					크
			9	चौपाई				
सतनाम	ऐ न	पैठि जब	देखा अंजी <sup>:</sup>	रा। स्रति	झरोखा	अहे शरीरा	ा२०६ ।	सतनाम
첖				•		आपु अकेला	.।२०७।	크
Ļ				•		ु तसंगमेला		a۱
सतनाम						ा महँ डोले	1२०६।	सतनाम
[ 된						ड़ कहँ लेखो		푀
ᇤ				-,		त्र सम जान		4H
सतनाम						गले सो प्रार्न	ो ।२१२ । ।	सतनाम
		$\odot$		साखी - २				4
<sub></sub>		9	मौ जल अगम	गम्भीर है, ब	बहे कहंर दरि	याव।		쇠
सतनाम			नाम जहाजे च					सतनाम
				11				
स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	Ŧ

स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
				चौपाई			
且	अब	कहों पृथ्व	ी कर लेख	ज्ञा। जो क	छु ज्ञान ग	मि महँ देखा कथा सुनाई	⊺ ।२१३ । 🔏
सतनाम	सतपु	,रुष मिले	मोहिं आ	ई। आदि	अन्त सब	कथा सुनाई	ी२१४। 🗐
						भनेकिन्हि राउ	
Ħ	तामें	कहिये ज	ाो सागर	साता। नर्द	ो अनेक ग	ने को ज्ञाता	१ १२१६। 🔏
सतनाम	तामें	फूल विट	प बन झा	री। फूल	अनेक को	ने को ज्ञाता कहे सँभारी	ा२१७। <mark>च</mark>
	तामें	फल मेव	ा सब खा	नी। अमृत	रस रसन	ग जो जानी	1२१८।
테	तामें	पाहन भि	न्न-भिन्न ख	ग्रानी। लाल	सफेद फि	टेक जो जार्न जब आनी	ो ।२१६। 🐴
सतनाम	सु र्खा	स्याह ज	र्द की खा	नी। गुप्त	धातु कादि	जब आनी	।२२०। 🗄
	राव	रंक औ	वर्ण विशो	षी। दुःखी	सुखी अ	नेकिन्ह लेखी	112291
सतनाम	ऊँच	नीच महि	मण्डल झार	री। दुःख र्	पुख भोग क	हरहिं नर नार्र कहिं दाना	ो।२२२। 🗂
<u> </u>	रं ग	राग कहि	पढ़े पुरा	ाना। उठी	प्रात देहिं	कहिं दाना	· <sub> २२३ </sub>
	नाना	रंग विदि	ाध यह बा	नी। भौ	सागर की	अकथ कहानी	
सतनाम				साखी -	२9		सतनाम
표		7	जल थल धरत	ो सघन वन,	सागर अगम	गंभीर।	国
			केते कविता	होय गये, हत	द दरिया के र्त	ोर ।।	الم
सतनाम				छन्द -	¥		संतन
ᄺ		सब र	कहत कहि क	हि ज्ञान महिम	ना, मूल निगम	न पावहीं।	$\exists$
Ļ		वेद	शास्त्र विवि	धे बानी, अन	न्त कहि कहि	गावहीं ।।	٨
सतनाम		ব	pहि कहत अ	गम अगाध क	थनी, वार न	पावहीं।	सतनाम
		सूर	क्ष्म भेद निज	ज्ञान सतगुरु,	सहज पन्थ ब	ातावहीं ।।	14
ᆈ				सोरठा -	Ý		잭
सतनाम			सतगुरु शब्द	विवेक, पद प	ांकज चित्त में	सनी।	सतनाम
			काटु कर्म क	ा रेख, उज्जव	ल दशा गुन	गनी ।।	
且				चौपाई			섴
सतनाम	अंड	न पिंडज	उखामज झा	री। कहि	न जात वि	विध विस्तारी	सत <u>न</u> म
	अवि	ने पताल	गगन विस्त	ारा। चाँद	सूर्य महि	मण्डल तारा	ा२२६।
<u>테</u>	को	कहि सके	ज्ञान मुख	बानी। कहि	कहि थाके	मण्डल तारा वेद बखार्न कथा बखार्नी	।२२७। 🛓
सतनाम	ब्र ह्या	थाके का	हे मुखा बा	नी। चारि	वेद कवि	कथा बखानी	।२२८। 🗐
				12			
4	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	
	सनकादिक आदि ले किहया। किह किह थाके बानी तिहया।२२६। गौरि गनेश और शंकर योगी। थाके फिरिहं ज्ञान रस भोगी।२३०। थाके व्यास जिन्ह वेद बखाना। पुराण अठारह कीन्ह विधाना।२३१।	
lĘ	गौरि गनेश और शंकर योगी। थाके फिरहिं ज्ञान रस भोगी।२३०।	섥
सतनाम	थाके व्यास जिन्ह वेद बखाना। पुराण अठारह कीन्ह विधाना।२३१।	
	थाके शेष सहस्र मुख बानी। भारद्वाज मुनि कथा बखानी।२३२।	
lĘ	कश्यप मुनि मुन्निह के राजा। कथेवो ज्ञान मुनि मन्त्र समाजा।२३३। मारकण्डेय अकथ कहि बानी। सप्त ऋषि मुनि कथा बखानी।२३४।	섥
सतन	मारकण्डेय अकथ कहि बानी। सप्त ऋषि मुनि कथा बखानी।२३४।	
	नारद कहेवो भिक्त सभ जानी। ब्रह्म ज्ञान सुखदेव बखाानी।२३५।	
lĘ	बालमीकि रामायण कहिया। अगुमन कथा राम के जहिया।२३६। दत्तात्रेय दश पन्थ उचारा। दश पन्थ कीन्ह विस्तारा।२३७।	섥
सतन	दत्तात्रेय दश पन्थ उचारा। दश पन्थ कीन्ह विस्तारा।२३७।	
	आदि सिद्धि जो गोरख ज्ञानी। कहेवो सिद्धि सब योग बखानी।२३८।	
틸	कथोवो कबीर ज्ञान का मूला। चारि वेद ताहि नहिं तूला।२३६। पण्डित मुनि भक्त सब ज्ञानी। कहों कहाँ ले कथा बखानी।२४०।	섥
सतन	पण्डित मुनि भक्त सब ज्ञानी। कहों कहाँ ले कथा बखानी।२४०।	111
	साखी – २२	
ᆲ	कहेवो ज्ञान जगत सब, वेद विदित सब जानी।।	섥
सतनाम	मुक्ति पन्थ सतगुरु बिना, नहीं परा पहचानी।।	सतनाम
	चौपाई	
तनाम	चौपाई अब कहों सब लोक बखानी। साहेब संग भेद जो जानी।२४१। साहेब सत्ता जो कहा बखानी। छप लोक की महिमा जानी।२४२।	섥
सत	साहेब सत्ता जो कहा बखानी। छप लोक की महिमा जानी।२४२।	크
	छप लोक तीनि लोक ते न्यारा। साहेब कहेवो भेद टकसारा।२४३। सब सुख साहेब कहा बखानी। अमर लोक की महिमा जानी।२४४। दया सिन्धु सुख सागर खानी। अविगति रूप किमि कहों बखानी।२४५।	
l≡	सब सुख साहेब कहा बखानी। अमर लोक की महिमा जानी।२४४।	섥
सतनाम	दया सिन्धु सुख सागर खानी। अविगति रूप किमि कहों बखानी।२४५।	크
	अति गम्भीर गुन विमल पुनीता। सुख सागर दया सिन्धु अनूपा।२४६।	
सतनाम	यह जिन जानहु मन की उक्ति। साहेब सदा प्रेम जन युक्ति।२४७।	섥
सत्		सतनाम
	जो कछु देखा लिखा सोई भाषा। ज्ञान दीपक उर अन्तर राखा।२४६।	
सतनाम	जबहीं दीपक बरें उजियारा। ज्ञान दृष्टि सब कथा पसारा।२५०।	सतनाम
सत		불
	साहेब प्रताप सत्त निजु बानी। कहों कथा सब लोक बखानी।२५२।	
सतनाम	तुम प्रताप सभो गुन लहेऊ। विमल चरण पद पंकज गहेऊ२५३।	सतनाम
सत	प्रेम सुधा रस अमृत सानी। कहों सुनो कवि भेद बखानी।२५४।	표
		<u> </u>
ΓA	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u>។                                    </u>

स्	नतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	नाम	— Ŧ
Ш	साखी – २३		
텕	तब देखा सो अब देख, जिन्दा अजर अमान।		섥
सतनाम	अजर अमर वोय लोक है, प्रेम प्रीति निर्वान।।		삼ं 다  1
Ш	चौपाई		
सतनाम	दीप दीप सब कथा सुधारी। जहवाँ अजरा ज्योति संवारी।२५५		सतनाम
뒢			쿸
Ш	रैनि दिवस उगे निहं तारा। चाँद सूर्य निहं पवन संचारा।२५७		
सतनाम	अविगति ज्योति करे प्रकाशा। झरे अजर मिन लोक निवासा।२५८ बीस सहस्र तहाँ पलंग कर भाऊ। अमरापुर अमर है गाँऊ।२५६	;	섬기
IF			귴
	तामे दीप सभो विस्तारा। दीप दीप सब पुष्प संवारा।२६०		<b>~</b> 1
सतनाम	सोरह योजन पालंग भाऊ। गंध सुगंध रहा छवि छाऊ।२६९ तख्त सेत तहाँ सन्दर सोहाई। जहवाँ परूष अमरपर आई।२६२	) [	<b>绍</b> 山
ᄪ		` \	푀
ᆔ	सत सुगंध सुख सागर खानी। बैठे हँस सुख कहे बखानी।२६३		심
सतनाम	अग्र बास तहाँ रहु निर्द्धन्दा। पुहुप सेज पर करहि आनन्दा।२६४ सेत अमर तहाँ हंस बिराजे। सेते छत्र तहवाँ सिर छाजे।२६५	1	7
P		۱' ٔ	ч
上	सेते झलके चहुं दिशि मोती। सेत हंस है निर्मल ज्योति।२६६		섴
सतनाम	साखी – २४		सतनाम
	अति विलास सुख सागर, सुनो श्रवण चित्त लाय।		
F	अमृत फल तहाँ पाइये, युग-युग क्षुधा बुताया।। चौपाई		셝
सतनाम	यापाइ अम्बु दीप अमृत की खाानी। लागी झरि बरषे जनु पानी।२६७		삼그기म
Ш			
सतनाम	फुहुकार परे सब लोक समेता। किहे न जात सुख सागर एता।२६० कोताहल जहँ तहँ सब करई। अमर होय कबिहं निहं मरई।२६६	,   .	सतनाम
썦	दया दीप सुख सागर खानी।। हंस बोलहिं सुख अमृत बानी।२७०	,	쿸
	ित्या तीम सकत कंत्र तीव्या। मेम मीति सन मुस्मति जीव्या २०००	اند	
सतनाम	राव रंक की डर नहिं आवै। रोग दोष तहवाँ नहिं धावै।२७२		सतनाम
ĮĖ	। पुहुप दीप जहाँ पुष्प बेवाना। क्षण क्षण वृगसे पुष्प अमाना।२७३	- 1	귤
Ļ			<b>~</b> 1
सतनाम	पुहुप पलंग सबन्हि के बासा। आवै घ्राणि लपट चहुं पासा।२७५		सतनाम
	14		푀
स		<u> </u>	Ŧ

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	 <u> </u> म
	अति सुगन्ध सुन्दर है दीपा। रहे सहज जहाँ अग्र सनीपा।२७६।	
नाम	पायर दीप चौकि चहुं पासा। छापा सनदि सत्ता प्रकाशा।२७७। कामिनी रूप कहा नहिं जाई। अति सुन्दर छवि बैन सोहाई।२७८।	섥
सत	कामिनी रूप कहा नहिं जाई। अति सुन्दर छवि बैन सोहाई।२७८।	큄
	लोल कपोल सुन्दर अति नैना। दशन चमके बोलत बैना।२७६।	
네버	चीखुर चीखुर मोती गुहि डारी। श्रवण झलके मनि जनु बारी।२८०। नख सिख लाल रतन जनु लागे। भुजा सुन्दर मनि मानिक जागे।२८१।	स्त
सत	नख सिख लाल रतन जनु लागे। भुजा सुन्दर मनि मानिक जागे।२८१।	쿸
	अमर झलाझिल पेन्हे सोई। मानो डांक सुधा सब होई।२८२।	
ननाम	मंगल गाविहं कोकिल बानी। शोभा किमि किह जात बखानी।२८३। देखी हंस बंश सुखा लागा। काम क्रोध तहवाँ निहं जागा।२८४।	स्त
<u>ਜ</u>	देखी हंस बंश सुखा लागा। काम क्रोध तहवाँ नहिं जागा।२८४।	크
L	छन्द – ६	
सतनाम	अति झलाझिल ज्योति निर्मल, किह न जात मुख बैनहीं।	सतनाम
    판	अति सुगंध परिमल तहाँ, लै लपट चहुं ओर धावहीं।।	표
ᇤ	पुहुप वृगसित विविधि बानी, संजन सुखद सोहावहीं।	세
सतनाम	ज्योति जगमग छत्र फिरे, पदुम झलाझिल आवहीं।।	सतनाम
	सोरठा – ६	"
नाम	शोभा अगम अपार, किह न जात मुख बैनिहें।	쇠
सतन	वेद न पावहिं पार, जौं मुख होहिं सहस्र फिन।।	सतनाम
	चौपाई	'
<u>표</u>	विष्णु बैकुण्ठ सिंहासन राजे। मन्दिर धाम तहाँ छवि छाजे।२८५।	쇩
सतनाम	नारद शारद और महेशा। गणपति गौरि आदि गनेशा।२८६।	सतनाम
	हरि भक्तिहिं बैकुण्ठ विचारा। राम नाम निज ज्ञान सुधारा।२८७।	- 1
सतनाम	सो बैकुण्ठ अचल निहं भाई। फिरि भर्मे चौरासी जाई।२८८। अचल पद के सब मिलि लागे। मन मत योग सबे मिलि जागे।२८६।	सतनाम
<u>ਜ</u> ਰ	अचल पद के सब मिलि लागे। मन मत योग सबे मिलि जागे।२८६। चौरासी कबिहं निहं छूटे। धरि-धरि काल गर्भ महं लूटे।२६०।	ᆲ
	ब्रह्म लोक ब्रह्मा स्नाना। तहां काल फेरि करे पयाना।२६१।	
सतनाम	इन्द्र लोक कह दानी धावै। दान करे फल इहई पावै।२६२।	
쟨		ヨ
F	एक निरंजन सबिह नचावै। चीन्हें बिना कोई मुक्ति न पावै।२६३। झूठ जाने झूठा है सोई। शब्द विचार करिहं नर लोई२६४। सत्ता वचन सुनो सत्ता सन्ता। ज्ञान चिन्हें बिनु मन अनन्ता।२६५।	<b>A</b>
सतनाम	सत्त वचन सुनो सत्ता सन्ता। ज्ञान चिन्हें बिनु मन अनन्ता।२६५।	नतना
	15	#
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म

स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	— F		
l				साखी - २	Y					
Æ		-	ज्ञान विचारहु ।	एक रस, प्रेम	। सुधा सम प	ाय ।		섥		
सतनाम		स्	गतगुरु सदा स	मीप है, विव	रण करो बन	य।।		सतनाम		
l				चौपाई						
सतनाम	सत्त	पुरुष मिले	मोहिं आइ	ई। उन्हीं	सब भोद	कहा समुदाइ	ी२६६।	섬기		
Ҹ		पुरुष मिले वचन लिखा						쿸		
	1	पुनीत सो								
सतनाम	चौरा	सी कबहीं जीव जाय च	नहिं जाई।	फेरि फेरि	रे ज्ञान भ	क्ति लवलाई	ी २६६।	स्तन		
ᆌ	1							l		
_	_	दानी है					I			
सतनाम	सत्तन	ाम विमल निःअक्षार	पद पार्वे	। चौरास	किबोहे	नहि आवे	'।३०२।	तना		
*	नाम 	निःअक्षर	ानमल डा र			नाह चा	रा३०३।	ㅋ		
E			·	साखी - २	•	<del></del> .		ᆧ		
सतनाम			हे दरिया जग					सतनाम		
"		প্ৰ-	ह जिन्ह शब्द	<b>3</b> 6	त्रगुण माया त	યાાગ 🛘 💮				
- 테	हो से	साहेब हैं	਼ਹਾਜ਼ਕ ਹਾਵੀ	चौपाई	गाँव वज्ञ	. मस्य नोस्न	T 12 6 9 1	सत्न		
辅		भुजा दशन								
	े रहा रिस्हा	रुप उदित	र जा जा उजियारा।	वोये क	वर्गा हैं <i>उ</i>	गल करार	[ 130E ]			
सतनाम	_					 बचन सुलेख	T 1300 I	सतनाम		
ᅰ							Τ  3ος	큠		
	  बावन	कच्छ नहिं रूप नहिं देवकी घर	बलि के जां	चेउ। पैठि	पताल नाग	। नहिं नाथे	उ।३०६।			
सतनाम	नहिं	देवकी घर	जन्मे वो	बारा। न	हें कंस ह	तेवो प्रचार	T 13901	सत्न		
  F	नहिं	गोवर्धन कर	गहि लीन्ह	प्रा। नहिंग	गोपिन्ह संग	क्रीडा कीन्	हा ।३११ ।	ㅂ		
l ⊣	नहिं	हिरण्यकशिष्	पु वोद्र विव	गरा। दैत	अनेक न	हे छलि मार	त ।३१२ ।	쇄		
सतनाम	नहिं	नि:कलं की	धरे शरीर	ा। नहीं	तेग कर	लीन्हों वीर	T 13931	सतनाम		
	साखी - २७									
  田			यि साहिब साग	,				섥		
सतनाम		उप	ाजी बिनसी ख	पे नहीं, मात्	<b>ा</b> -पिता नहिं १	भाय।।		सतनाम		
				16						
7	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	1_		

वौपाई  उपजे खापे सो दूजा भाई। दूजा माया जगत् भरमाई।३१४।  पूजल माया कोई अन्त न पावै। वेद विदित किर या जग गावै।३१६।  पूजल माया कोई अन्त न पावै। वेद विदित किर या जग गावै।३१६।  पूजल माया कोई अन्त न पावै। वेद विदित किर या जग गावै।३१६।  पूजल मीया कोई अन्त न कोई। पिढ़ पिण्डत ज्यों वेद बिलोई।३१०।  निरंजन की गित बूझे न कोई। पिढ़ पिण्डत वेद बिलोई।३१०।  नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बिलान।३१६।  काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०।  दूजा कर्त्ता जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१।  सावी - २८  अरूझे भेष अलेख सब, अरसीवरना के तीर।  सत्त शब्द चीन्हें बिना, फीर फीर धरे शरीर।।  वौपाई  साई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४।  साई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४।  साई बनेनु कोई न बांचे। देह धिर धी जल नाचे।३२४।  उन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं।  पूष वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं।  छिकत भी मन गगन झरि तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्मय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	स	तनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
प्रवापण तमगुण तामस देहा। त्रिगुण लीला हो छो फेरि छो हा। ३१९। प्रवापण तामस वेहा। त्रिगुण लीला हो छो फेरि छो हा। ३१९। प्रवापण को इं अन्त न पावै। वेद विदित किर या जग गावै। ३१६। प्रवापण की गित बूझे न कोई। पिढ़ पिण्डत ज्यों वेद बिलोई। ३१९। नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बखाना। ३१६। नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बखाना। ३१६। काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई। ३२०। दूजा कत्तां जल के धापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा। ३२१। दूजा कर्तां जल के धापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा। ३२१। साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें विना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई। ३२४। माम चीन्हें विनु कोई न बांचे। देह धरि धरि भी जल नाचे। ३२६। विनु वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्ता परवाना। ३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छितत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरटा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरू मिले तो पाइये।।					चौपाई			
प्रबल माया कोई अन्त न पावै। वेद विदित किर या जग गावै।३१६।  पिरंजन की गित बूझे न कोई। पिढ़ पिण्डत ज्यों वेद विलोई।३१७।  निरंजन की गित बूझे न कोई। पिढ़ पिण्डत ज्यों वेद विलोई।३१७।  नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बखाना।३१६।  नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बखाना।३१६।  काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०।  दूजा कर्ताा जल के थापा। मोक्षा मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१।  तातल शीतल होय मलीना। धूप तवै जल होखे छीना।३२२।  साखी - २८  अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर।  सत्त शब्द चीन्हें बिना, फीर फीर धरे शरीर।।  चौपाई  सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४।  साधी - १८  अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर।  सत्त शब्द चीन्हें बिना, फीर फीर धरे शरीर।।  चौपाई  सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४।  हिम्स वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७।  छन्द - ७  गेह मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं।  चहि चिह चाखिहं विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।।  पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं।  छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	킠	उपजे	खापे सो	दूजा भा	ई। दूजा	माया जग	ात् भारमाई	ा३१४।
निरंजन की गित बूझे न कोई। पिढ़ पिण्डत ज्यों वेद बिलोई।३१७। विनेत्र अठारह पुराण और भागवत् गीता। शास्त्र पढ़े सो बहुत पुनीता।३१६। नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पिण्डत वेद बखाना।३१६। काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०। दूजा कर्ता जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहें सब पापा।३२१। दूजा कर्ता जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहें सब पापा।३२१। साथी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अरसीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि थरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंह निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। छन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, अवत परिमल डाकहीं। सोरटा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।	सन	रजगुण	ा तमगुण	तामस देहा	। त्रिगुण	लीला हो खो	फेरि खोह	T 1३१५ । 🗐
अठारह पुराण आर मागवत् गाता। शास्त्र पढ़ सा बहुत पुगता। ३७६। नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पण्डित वेद बखाना।३१६। काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०। दूजा कत्तां जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१। दूजा कत्तां जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१। विरोध मेध बहुत बिढ़्याई। ताके सब कर्ता ठहराई।३२३। साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फोरे फोरे धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धरि धरि भी जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। विरोध साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरटा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।		प्रबल	माया कोई	अन्त न प	ावै। वेद र्ा	वेदित करि	या जग गाउँ	मै ।३१६।
अठारह पुराण आर मागवत् गाता। शास्त्र पढ़ सा बहुत पुगता। ३७६। नेम धर्म काशी स्थाना। अरूझे पण्डित वेद बखाना।३१६। काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०। दूजा कत्तां जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१। दूजा कत्तां जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१। विरोध मेध बहुत बिढ़्याई। ताके सब कर्ता ठहराई।३२३। साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फोरे फोरे धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धरि धरि भी जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। विरोध साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरटा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।	नाम	निरंजन	। की गति	बूझे न के	ोईं। पढ़ि	पण्डित ज्यों	वेद बिलोइ	ई ।३१७।
काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०। वैने स्वापा।३२१। स्वापा।३२१। साल होय मलीना। धूप तवै जल हो छो छीना।३२२। साली - २८ अरुझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फीरे फीरे धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंहें निहें जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। वाय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्च्य, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिरे तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।	뒠	अठारह	पुराण औ	ोर भागवत्	गीता। शा	स्त्र पढ़े सो	बहुत पुनीत	∏  395    3
काशी योग जाप जाप सब करई। मोहिनी रूप सभे बुद्धि छरई।३२०। वैने स्वापा।३२१। स्वापा।३२१। साल होय मलीना। धूप तवै जल हो छो छीना।३२२। साली - २८ अरुझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फीरे फीरे धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंहें निहें जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। वाय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्च्य, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिरे तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।			•	`			9	. 139 <del>6</del> 1
दूजा कर्त्ता जल के थापा। मोक्ष मुक्ति मेटिहं सब पापा।३२१। साताल शीतल होय मलीना। धूप तवै जल होखे छीना।३२२। साखी - २८ अरुझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। किन्द - ७ गहु मूल मिहमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरटा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सत्तगुरु मिले तो पाइये।।	디테							ई ।३२० । <mark>इ</mark>
तातल शीतल होय मलीना। धूप तवै जल हो छो छीना।३२२। स्विम् विरोध मेध बहुत बिह्याई। ताके सब कर्त्ता ठहराई।३२३। साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अर्स्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहं निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। ताके छो जहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल मिहमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह चिह चाखिहं विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	<b>"</b> "		•	_	_			-
साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहें निहें जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भौ जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह्न चिह्न चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत पिरमल डाकहीं। छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	ᆈ	तातल	शीतल ह	होय मलीन	ा। ध्रप	, तवै जल	होखो छीना	   322   <u> </u>
साखी - २८ अरूझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहें निहें जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भौ जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्त परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह्न चिह्न चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत पिरमल डाकहीं। छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	सतना	बरिषो	मेघ बा	इत बढिय	ाई। ताके	सब क	र्ता ठहराई	13231
अरुझे भेष अलेख सब, अस्सीवरना के तीर। सत्त शब्द चीन्हें बिना, फेरि फेरि धरे शरीर।। चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिहें निहें जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भी जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्ता परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल मिहमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह्न चिह्न चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।		,,,,		S				
सत राज्य वाष्ट्र विमा, फार फार वर राररा।  चौपाई  सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंह निहं जाई।३२४।  नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भौ जल नाचे।३२५।  ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६।  कुन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं।  चिह चिह चाखिंह विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।।  पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत पिरमल डाकहीं।  छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	且		3	गरूझे भेष अल		•	नीर ।	2
चौपाई सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंह निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भौ जल नाचे।३२५। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह चिह चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत पिरमल डाकहीं। छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	सत							
सोई करो जीव बांचे भाई। चौरासी जीव कबिंह निहं जाई।३२४। नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धिर धिर भौ जल नाचे।३२६। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्ता परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल मिहमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह चिह चाखिं विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगिसत विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।			`					
नाम चीन्हें बिनु कोई न बांचे। देह धरि धरि भौ जल नाचे।३२५। ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह चिह चाखि विषय बानी, आवत परिमल डाकहीं। पृष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	크	सोर्द :	करो जीव	बांचे भार्द	•	जीव कबहि	इं नहिं जार्द	13281
ताके खोजहु सब कर मूला। प्राण पिण्ड रहे सम तूला।३२६। सून्नी वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्ता परवाना।३२७। छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चहि चहि चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	뒢	,						`   <del>-</del>
वोय साहेब सतपुरूष अमाना। आदि अन्त सत्ता परवाना।३२७।  छन्द - ७  गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चिह चिह चाखिहें विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।।  पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।								
छन्द - ७ गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चहि चिह चाखि विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।। पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	तनाम		•	•			•	13201
गहु मूल महिमा ज्ञान निश्चय, अचल अमर पद पावहीं। चहि चिह चाखि विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।।  पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं। छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।। सोरठा - ७ सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	\ <u>F</u>	919		ા મુલ્લા ગામ		9 01:(1 (1	रा प्रापा	12 70 1 3
चहि चिह चाखि विमल रस, यह संत सो सुख पावहीं।।  पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं।  छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	ᆈ		ਸਟ ਸ	<sub>ਕ ਸਟਿਸ਼ਾ</sub> ਰਾਤ	•	जिल आपर पा	र पानर्से ।	
पुष्प वृगसित विविध बानी, आवत परिमल डाकहीं।  छिकत भी मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	सतना		,			_		
छिकित भौ मन गगन झिर तहां, झलक पलक में आवहीं।।  सोरठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।						•		
सारठा - ७  सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे।  निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	巨		_			_		
सुखसागर निजु ज्ञान, सत्त शब्द जाके बसे। निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।	सतन		୭।୩୩	मा मन गगन	_		आवहा ।।	
निर्मल निर्भय ध्यान, सतगुरु मिले तो पाइये।।							<b>→</b> .	
17	크							
	सत		[•	१मल निभय ध	यान, सतगुरु	ामल ता पाइ —	य ।।	
सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	   स	तनाम	सतनाम	सतनाम	17 सतनाम	सतनाम	सतनाम	 सतनाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	—  म
	अब कछु कहों पवन कर लेखा। जो कछु ज्ञान दृष्टि में देखा।३२८।	
सतनाम	साहब संग परिचे जो पाई। सो कछु भोद कहों समुझाई।३२६।	섬
सत	ज्ञानी होय सो करे विचारा। पवन पवन के भेद सुधारा।३३०।	सतनाम
	साहब प्रताप बोलो निज बानी। कहों भेद निज कथा बखानी।३३१।	
सतनाम	पद पंकज प्रेम लवलाई। चरण कमल दल रहों समाई।३३२। दया कीन्ह तब सब गुन ज्ञाना। विमल विमल पद कहों बखाना।३३३।	सत
HG HG	दया कीन्ह तब सब गुन ज्ञाना। विमल विमल पद कहों बखाना।३३३।	쿸
	साखी – २६	
सतनाम	कवन पवन धरती बसे, कवन पवन आकाश।	सतनाम
뒢	कवन पवन पाताल है, कवन पवन घट बास।।	<b> </b> 쿸
	रज पवन धरती बसे, उदया जीत आकाश।	
सतनाम	शरद पवन पाताल है, शूर पवन घट बास।।	सतनाम
诵	चौपाई	<b>코</b>
	मन पवना के एके रंगा। तातल शीतल सबके संगा।३३४।	
सतनाम	जो भीतर सो बाहर देखा। बाहर भीतर एके लेखा।३३५।	सतनाम
ᆁ	उदय जीत पवन प्रचण्डा। सात द्वीप किहये नव खाण्डा।३३६।	표
┞	चाँद सूर्य है ताहि तबीना। पवन पचीस होय नहिं भीना।३३७।	لم
सतनाम	तामे गन सब रहेवो समाई। ज्यों चश्मा में पार दिखाई।३३८।	सतना
F	चाँद सूर्य उनमुनि बासा। तामे पवन प्रेम प्रगासा।३३६।	团
ᄪ	नील पवन जब होय समीपा। बरिषे मेघ घटा चहुं दीपा।३४०।	쇠
सतनाम	पवन पचीस ताहि के संगा। गरिज गगन सब करे तरंगा।३४१।	सतनाम
	बरषे नीर अखण्डित धारा।। उपजे शालि सब जगत संवारा।३४२।	
巨	विजया बल जो पवन कहावे। गरजे ठनके त्रास देखावे।३४३।	섴
सतनाम	ठनिक ठनिक जबिहं घहराना। अघात बाण धरती पर आना।३४४।	सतनाम
	पवन चारि है ताके पासा। चपला चमके गगन तमाशा।३४५।	-
E	काल जंजालि पवन कहावै। सूर्य चन्द्रमाहिं जाय छिपावै।।३४६।	쇩
सतनाम	चन्द्रमिहं काले कीन्हों ग्रासा। पाखांड मन्त्र भोद प्रगासा।३४७।	सतनाम
	पवन चारि है ताके पासा। रहे गगन वोय अर्ध निवासा।३४८।	
सतनाम	नव ग्रह बारह हैं संक्रांती। उदय अस्त दिन औ राती।३४६।	सतनाम
재	सूर चन्द्र मूल में रहई। तबिहं ग्रहन ग्रासे चहई।३५०।	ם
	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_ 
	Maria Maria Maria Mulia Mulia Mulia Mulia Mulia	

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u>म</u>					
	साखी – ३१						
सतनाम	सूर्य चन्द्र सब पास हैं, बूझहु पण्डित राज।	מויווי					
갶	विजय लगन के जानिये, सफल होय सब काज।।	3					
王	चौपाई	1					
सतनाम	धुरन्धर पवन बहे दिन राती। कतिहं नेम कतिहं उत्पाती।३५१।	4011					
	गन्ध पवन फूलिन्ह में बासा। गन्ध सुगन्ध सब करे निवासा।३५२।						
सतनाम	मनोरथ पवन काम संग रहई। योग भोग सब आपिह करई।३५३।	4111					
잭	त्रिकुटि विन्द काम कर थाना। मेरुदण्ड होय करे पयाना।३५४।	1					
सतनाम	मूल मंगल पवन है रासी रज विन्द ले पिंड प्रगासी।३५५।	섥					
सत	जबहिं योग त्रिया कह आवै। मूल मंगल तब जीव संग धावै।३५६।	सतनाम					
Ļ	रज बिन्द एक घर होई। पवन प्रान ले पैठे सोई।३५७।	Ι.					
सतनाम	तुरे पवन पांव में रहई। चलत पांव को रक्षा करई।३५८।	सतनाम					
	तुरुता नन्द पवन है खानी। रस गोरस अमृत सब आनी।३५६।						
नाम	मंगल मूल है पवन सुधारा। विमल विमल पद करे विचारा।३६०। दस पवन रहे तब राधी। योगी योग युक्ति से साधी।३६१।	ජ 건 기					
सत		園					
王	छन्द - ८	4					
सतनाम	आदि अन्त सब पवन पानी, जल थल सबे बनावहीं।	सतनाम					
	अंडुज पिंडुज द्रुमलता, पवन ते सुख पावहीं।।						
सतनाम	पवन पानी पिण्ड रक्षा, प्रेम प्रीति लगावहीं। अन्न भूषण पवन पानी, मन अनन्त होय धावहीं।।	सतनाम					
퐈	सोरठा – ८	ㅂ					
सतनाम	सन्तिहि करो विचार, संसे काल बिसारि के।	सतनाम					
F	गन्भ अपर सार तर्ज						
सतनाम		सतनाम					
	19						
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u>म</u>					